इन्सान हूँ मैं

इन्सान हूँ इन्सान की तरह जिऊँगा
दूसरे को खुद के पदचिन्हों पर आगे बढ़ता देख जलूँगा

क्या करूँ मैं तो मदद था करना चाहता

पर मदद मेरी लेकर उठ खड़ा हुआ

मुझे छोड़ वो आगे है बढ़ दिया

मैं भी चाहता था उसके ऊपर जाना

पर करवट किसमत की ऐसी बदली

हार गए मेरे रैना

कभी भी मैं उसे छू सकता था

उसकी मदद लेकर

ना मना कर पाता

कर्ज़ था मेरा उस पर

पर अहम है मेरा

जिसके दम पर मैं खुद ही चल दिया

बहुत पीछे था पर गम ना था हारने का

मन जरूर रहा था कचोट

उसकी उस जीत पर

पर वह भी मेरा साथी था

मुझे थी खुशी उसकी जीत पर

ख्याल उसे आया मेरा

पर देर थी अब हो चुकी

मेरा मन रहा कचोट

उसकी उस जीत पर

आखिर मन था इन्सान का

इन्सान हूँ मैं

हर खुशी हर गम

हर शक्स को मेरी दुआ

शोभित अग्रवाल